डॉ० ओमप्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

25/07/20

विषय- संस्कृत, बी॰ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
कादम्बरी - शुकनासोपदेश
गद्यांश व्याख्या

उद्दामदर्पश्वयथुस्थगितश्रवणविवराश्चोपदिश्यमानमपि ते न शृण्वन्ति, शृण्वन्तोऽपि च गजनिमीलितेनावधीरयन्तः खेदयन्ति हितोपदेशदायिनो गुरून्।

सान्वय व्याख्या :- (उद्दामदर्पश्वयथुस्थगितश्रवणविवराश्च) उत्कट अहंकार रूपी शोथ (सूजन) से अवरुद्ध कर्ण छिद्रों वाले (ते) वे राजा लोग (उपदिश्यमानमपि) उपदेश की बातों को भी ~~नहीं सुनते हैं~~ (न शृण्वन्ति) नहीं सुनते हैं। (शृण्वन्तोऽपि च) और सुनते हुए भी (गजनिमीलितेन) गजनिमीलिका (हाथी की तरह बन्द आँखों) से (हितोपदेशदायिनो गुरून्) हितकर उपदेश देने वाले गुरुओं का (अवधीरयन्तः खेदयन्ति) अनादर करते हुए (तिरस्कार करते हुए) उन्हें खिन्न करते हैं।

भावार्थ:- अगर कुछ लोग डर को छोड़कर राजाओं को हितकारक उपदेश देने का साहस भी करें तो राजाओं के कान उत्कट अहंकार से ऐसे बन्द

हो जाते हैं जैसे कान में सूजन हो जाने से उसके छेद बन्द हो जाते हैं। इस प्रकार उपदेश वचन उनके कर्णकुहरों में प्रविष्ट ही नहीं हो पाते, और कहीं वे प्रवेश पा भी जाएं तो राजा लोग ऐसे आँखें मींच कर अनसुनी कर देते हैं जैसे मतवाला हाथी आँखें मींचकर महावत के निर्देशों की उपेक्षा कर देता है। इस प्रकार वे अपने हितोपदेशक गुरुओं को सन्ताप पहुँचाते हैं।

टिप्पणी :- 'श्वयथु' आयुर्वेद का पारिभाषिक शब्द है। शरीरस्थ दुष्ट वायु, विकृत रक्त, पित्त और कफ को बाहर की सिराओं में ले जाकर पुनः उनसे अवरुद्ध गति होकर, त्वचा और मांस में स्थान कर लेता है। इस प्रकार रक्त सहित तीनों दोषों से होने वाले इस उठाव और कठिनता को श्वयथु या शोथ कहते हैं। हेतु विशेष व रूपभेद से यह नौ प्रकार का होता है, यथा- वातज, पैत्तिक, श्लैष्मिक, विषज आदि। दाढ़ी, कान आदि शरीर के ऊपर के भागों में होने वाला श्वयथु आमाशय के दोषों से होता है। कान में यदि श्वयथु हो जाए तो स्पष्ट है कि कर्णविवर के बन्द हो जाने से सुनने में भी कठिनता अनुभव होगी।

उद्दामदर्पश्वयथुस्थगित श्रवणविवराः - उद्दामश्चासौ दर्पः उद्दामदर्पः (क०धा०) उद्दाम दर्प एव श्वयथुः उद्दामदर्पश्वयथुः (क०धा०) तेन स्थगिते श्रवणविवरे येषां ते (बहु०)।

उपदिश्यमानम् - उप + दिश् + युक् + शानच् प्र० ए०।

शृण्वन्तः - श्रु + शतृ प्र० ब०। गजनिमीलितेन - गजस्य

य निमीलितं (नि + मील् + क्त) तद्वद् निमीलितं गजनिमीलितं (क० धा०) तेन । अवधीरयन्तः - अव + धीर + णिच् स्वार्थे + शतृ प्र० ब० ।
खेदयन्ति - खिद् + णिच् प्र० पु० ब० ।
हितोपदेशदायिनः - हितस्य उपदेशः हितोपदेशः (ष० तत्पु०) हितोपदेशं ददति इति हितोपदेशदायिनः, हितोपदेश + दा + णिनि वि० (पुं०) द्वितीया बहुवचन ।

Scanned with CamScanner